जिनका भिष्यत्र ग्रेष्या करना प्रत्यथिक धातु अपना गौत्र उभारता है तथा
जिनकी भिष्यत्र पाना प्रत्यथिक प्रक्षेप है अपना सीमार्य मानता है
उन्हें परम अक्षेपा
अरमात्मक वांगिर्द को दावर समाप्त
हिंदी साहित्य के इतिहास में कृष्ण अवतार का एक विशेष महत्व प्राप्त हुआ है। श्री भुवनेश्वर में काव्य रंगीन बलार गए हैं। 1 हृदयदास ने श्री श्री मुनिश्वर के अनुसार काव्य रंगीन बलार रचा है। 2 फिर पी हृदयदास ने लघु साहित्य में गृह-कवीताओं की संख्या शैशव कालादि है। 3 हृदयदास ने राम और कृष्ण दोनों को भु-भार उत्तराती बालक भरत का अवतार माना है। 4 इन्होंने कृष्ण को अवगत, अनंत, अनूप, अतिक्रम, अविचारी, गृहरुप, गृहरुपात्मिक उद्यम लोक नामों के अभिव्यक्ति किया है। 5

पास्तक की संक्षिप्ति के अभेदसारों को कह बात एक दम समय है कि हमारी संस्कृति की गंगा, राम और कृष्ण नामक दो कविता में से प्रवाणीत होती हुई अनंत की और उनके रचनात्मक है। 1 प्राचीन काल में जब वाणीकोको के राम – काव्य रचित था तो उन्हें बदल पुराने रहे। चरित्र के बारे में जनता उसे जानने की समस्या नहीं थी और फिर हरारों कविता जयन्त दोहे चरित्र वस्तु: वैदिक जी नहीं हुआ। 2 इन बुद्धिमान में कलाकार क्षेत्र की दृष्टि में एक हेतु चरित्र उपर जो विभूति के शेष सभी कविताओं में ये मानक यथार्थता तक पहुँचा हुआ था।

राम चरित्र अपनी लोक-महौसा के कारण कहा लोकसाहित्य था वहाँ उसके अपनी भूमिका के कारण अद्वितीय था वहाँ उसके अपनी मुनिश्वर के कारण अद्वितीय था वहाँ उसके लिए बिहार लोक। 3 भूमिका की बुद्धिमान ने उनके चरित्र को जानता वह व्यक्ति के शामील चरित्र से जीने वाले लोगों के लिए थे। 4 इस तरह कृष्ण-चरित्र की राजस्त्री के कविता होकर नहीं जीवन हुआ था, वह गाँवों में के शामील जीवन से उमरा था और जीवन पर उसके भान्त-जीवन की कविता एवं शिक्षालार्थी उनसे सम्मानिता किया है।

1- श्री मुनिश्वर, भक्ति, त्रिवेंद्र जयमान, इलाके 26.
2- पुस्तकाल पीवेल, सुर फौरानी, पढ़ सं 609, भ्रवाल प्रेस, भुआ, प्रथम सं 2014 दिवि।
3- संसारक - नेश्विलोर यालोखी, सुरसागर समा 2-36, नागरी भ्रविरिन्दी क्षेत्र, सं 2012 दिवि।
4- संसारक नेश्विलोर यालोखी, सुरसागर समा, 9-16
5- पुस्तकाल पीवेल, सुरसागरली 611, भ्रवाल प्रेस, भुआ, प्रथम संस्करण, सं 2014 दिवि।
भी किया और विश्राम भी किया। वह जावन पर भयानकों को बनाते गए और
गिराते भी गए। ऐसे उस देवता बनने दुर्गा कृष्णा निर्माण का कार्य में नायक के हप में उमरे हों
वह भयानक छां जा ची बने हुए हो के काव्यक जटिल मानने जावन के लिए और उन सारण ने
वह अपने हाथ का काम किया जो ग्राम में दुर्गा का बाह्य हो हो सकता है।
जावन के या छां होने के इतना निकट होने से हों जीवन भी उस दुर्गा का काम किया जो ग्राम में
अभ्यास भी है पर धर्म आता है। जिसी की आज्ञानी की और उठाया गया है
पर वह वस्त्र पैरों के काव्य भी बिरुद्धी के नीति अधिक संबंध है।

पुरुष के बचन से ही कृष्णा की लालिता का कारणों मुदने वो निश्चय रहता है।
वहीं तक कि कृष्णा बच्चे के प्रति एक निश्चित आयु की अवधारणा से बनने लगा और कृष्णा
के नीति विज्ञान का मन में मुदने। इसी नीति विज्ञान के प्रविष्ट बाथम काव्य के हप में वासना भी खुदे।
उनके प्रति अभ्यास के अवधारणा के मन के जन्म किया।
वह तब उसे अपने हप विकल्प से निकल कर लेते ली। वह प्रार्थक कृष्णा-काव्य भी भी
रहता विशे रचना दिन-प्रतिदिन कहने लो। इसी रूप के प्रविष्ट बाथम थी एक, रूप, रूप
कृष्णा-काव्य का विशेष अवधारणा किया। ज्ञर्काव्य में वे हो मन पर भाली
भाली नाकिनियों के अभ्यास तथा उनके सिखते ने अभ्यास प्रभाव डाला।

कृष्णा से अ खर जन भी के शेष-वर्णर की हो वस्त्र रचनाओं का प्राव: भी भावार माना। उन-हो ये कही दुखार की भाव दुर्गान पर भी विश्राम रहने
का प्रत्येक किया। अर्थ उभारना के कृष्णा-काव्य का और बाह्य अत्यन्तिक के भी हों।
अर्थ उभारना के कृष्णा-काव्य का नीति सारण के निकट होने से वह उन कृष्णा-काव्य के अभ्यास का
कारण या निश्चित होने का अभ्यास निकट होने का प्रत्येक करते है।
उनके जीवन भी के जन्म के भी भाव उन-हो के निश्चित होने का अभ्यास करते है।
अर्थ उन कृष्णा के अभ्यास के भी कारण कहां होने का अभ्यास करते है।
भावन का प्रार्थना भी का अभ्यास भी का अभ्यास करते है।
चारण के बाहर स्वयं भी का अभ्यास करते है। वस्त्र के निश्चित होने का अभ्यास करते है।
भावन का प्रार्थना भी का अभ्यास करते है। वस्त्र के निश्चित होने का अभ्यास करते है।
भावन का प्रार्थना भी का अभ्यास करते है।
बाद तक कोई बिखराना ने कृष्णा-कार्य यह शौच प्रक्रिया प्रस्तुत किया है। विशीर्षी ने मध्य-हिमालय सामाजिक जीवन का चित्रण किया है तो विशीर्षी ने सांस्कृतिक व्याख्या किया है लेकिन विशीर्षी ने एक बात की और चित्रण नहीं किया कि कृष्णा-कार्यों ने ग्राम की ही अपनी रचना न हैं केन्द्र बनी माना है? हिंदी साहित्य की कोई भी रचना ग्राम के छन्दों निश्चित नहीं रही। जवाब के रूप में केवल कहानी नतीजे सहज में उपलब्ध एक ऐसे व्यक्ति था जिन्होंने अपनी सांस्कृतिक व्यवस्था को केन्द्र ग्राम को माना। अाब तक जो शौच-प्रक्रिया कृष्णा-कार्य के सांस्कृतिक या सामाजिक पद्धति को देख खिले गए उन सबके खुशी इस दृष्टि का निराकार अन्तिम दिशा किया क्योंकि उनके अड़ियों रूप में रीति-रिवाज तथा धार्मिक विश्वास आदि व बने वाहे दंग से विश्वसन किया गया है लेकिन सांस्कृतिक रूप में कृष्णा-कार्य इस के केन्द्र में हिंदी ही उस मास्कबूँच का उद्धारण नहीं दिखाया गया जिसका आधार पर भारतीय संस्कृति-मयम्य ओर मानस ग्राम जीवन के संबंध में खुल कर सामने आ लेने के लिए भी यह प्रमाण सम्भव है जनकृमण हो सके।

इस दिशा में जर्जर बहुत से कृष्णा-कार्य पर शौच-प्रक्रिया लिखने वालों ने कृष्णा-कार्य के सांस्कृतिक पद्धति का उद्धारण किया है तो वह उन्होंने अंकुशित के ग्राम और नगर नामक दो भिन्न विश्वासों व विश्वसनीयता बाह्यिक प्रस्तुत नहीं किया है। इस दृष्टि से ग्राम: इतर विषय कृष्णा-कार्य के शौचकार्य के शौच-प्रक्रिया सांस्कृतिक व्यवस्था के नाम पर कृष्णा-कार्य में कृष्णा-संस्कृति के फिर खुले रूप को प्रस्तुत करते हैं जब फिर खुशी देखी हुई है कि कृष्णा-कार्यों का मानस संस्कृति के ग्राम-पंचा की जोर दी पूर्णत: कुछ हुआ है। उनकी अभिलाष कृष्णा-वाचन
के भी उसी रूप को पूर्ण संबंधित के साथ ग्रहण करती है जो ग्राम तक ही सीमित है। कृष्ण के नागरिक रूप को उन्होंने सरस्वती तौर पर कहीं-कहीं पर लिया है।

अतः कृष्ण-काव्य के इस पद का विश्लेषण जिस समाजशास्त्रीय ढंग से होना चाहिए था वैसा अभी तक नहीं हुआ है। जिस समाज-रचना का मूल प्राचीन-वाल तो ही ग्राम रहा ही और जो ग्राम-भावना में ही पूर्ण बना हो वह समाज का वास्तविक पद काला जा सकता है। अतः इस तथ्य का उद्धारण करना कृष्ण-काव्य की मूल प्रेरणा को ही सोचना है।

सुदेशन सेठ
कलात्मक अभ्यास

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का ज्ञात किसी विश्वास पारस्परिकता में हो एसे कि लोग यथा रूप से फिर से धर्म के विषय में यह प्रभाव फिंस कर निकालता है। शारीरिक रूपस्थता और अस्थिरता ने इस प्रभाव को कई तरह रोकने के केंद्र शीर्ष। किन्तु प्रारूप के दोनों दिशा में दो सी का व्यक्ति सदा से एक खेल नौरूर बनता दिखा कि मैंने स्वयं को बाग निराकेर रहे पाया। इस 3-1/2 वर्षों के अवधी में जो लोग मेरे साथ रहे थे, जिन्होंने प्रेमिका ने मुझे निराकर स्वतंत्रता में फिर से खुला फिंस का ठोस बनाया उनके प्रश्न, विचार और अपने वास्तविक जीवन के तथ्यों का पती श्री कृष्णा लाल महलेश्वर के प्रारूप जिन्हें प्रेमाभाषा व्यक्ति ने कैद करा दिया तक का जान रहने वाली विश्वसनीय की तारीख के साथ-साथ अभाव - वृद्धि के लिए प्रेमित तथा प्रश्न लक्षित किया उनके प्रारूप आमारा-प्रदर्शन तो स्वयं के लिए हो लगा। यह मैंने प्रबन्ध उनके महत्वाकांक्षा का फल है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध हिन्दी विवाह के प्रोफेसर जी: वर्माजी मेनोजी के निर्देश में रचित गया है। यह प्रबन्ध जी: मेनोजी के उत्साह का परिणाम है।

जी: उनके प्रारूप आबारा प्रदर्शित करते हैं।

प्रस्तुत प्रबन्ध को लिखने में साल मेरे कुछ तफ लगा मिला है। तो उसका तरार शह जी: रामाशान्त वर्माजी जी को जाता है। जिनके वर्षांत में बेटा की: रूप से भी लेकर उनके विषय में ऐसी ग्रहण गुण करते हैं जो कांति प्राप्त हुआ तथा उनके कृत्रिम-कार्यों की ग्रहणकथा की समझने में काम कर यह प्रेमिका मिली। प्रबन्ध लिखने के मुख प्रेमाभाषा तथा आबार-प्रदर्शन करने में जीवन-दोनों दिन उनके लिए आलोचना प्रदर्शित करने में मेरी वापसी किन्हींच-विवृद्ध है। इस समय सबसे ही सामान्य लोग देने वाले हिन्दी विवाह के अभियान जी: वर्माजी प्रवाह पारदर्शन तथा जी: महासिंह दोस्त जिन्होंने मेरे प्रति सहायता से आमारी हैं।

(संपाल प्रेम)

(उद्देश्य विना)